

परिधि के पार



राकेश बिहारी

हिन्दी
ADDA

परिधि के पार

नेहा ने उस रात अपनी डायरी के पन्नों पर लिखने के बजाय कुछ तस्वीरें उकेरी थी... गहरे नीले आसमान की गोद में खूब-खूब चमकता पूरा चाँद, भर आकाश जगमगाते सितारे और नीचे फूलों से लदी रातरानी... डायरी के हल्के बादामी सफे पर खिली रातरानी की भीनी सी महक नथुनों के रास्ते हौले-हौले उसके भीतर तक उतर रही थी - वह जैसे खवाबों की किसी नई दुनिया में पहुँच गई - उसकी उँगलियों में एक अनोखी सी जुंबिश हुई और उसने पूनम के चमकते चाँद के बाजुओं पर दो सुनहरे पंख जड़ दिए... उन पंखों पर जैसे वह खुद सवार हो गई थी... वह नीले आसमान के लगातार करीब होती जा रही थी... लाल और गंदुमी रंगों के विरल संयोग से बना कोई अदृश्य सूरज अपनी पूरी आभा के साथ उसकी नसों में किसी मीठे संगीत की तरह उतरने लगा था... वह एक अनाम रोशनी से नहा सी गई थी...

...अभिनव अपनी हर अगली बातचीत में उसे चौंका सा जाता है और हर उस चौंकानेवाली बात के बाद जैसे वह थोड़ी और सरक कर उसके कुछ और करीब हो जाती है... उस शाम जब फोन पर वह उसे अपनी ताजा पे स्लिप पढ़ कर सुना रहा था, नेहा के भीतर जैसे स्नेह और अधिकार की एक गुनगुनी सी नदी बह उठी थी... मंद, मंथर लेकिन एक अनोखे सुकून से भरी हुई... - कितना मूल वेतन, कितना डी.ए., कितने दूसरे पकर्स, कितनी अन्य कटौतियाँ... - और अंत में एक मासूम सी इच्छा... 'नेहा, इन दिनों मेरा मन एक रेकरिंग डिपोजिट शुरू करने का हो रहा है, जिन्हें मैं कभी खर्च न करूँ... भगवान न करें कभी ऐसी जरूरत पड़े लेकिन यदि कभी कोई मुसीबत आई तो वह तुम्हारे काम आ सके...' नेहा के लिए यह अप्रत्याशित था - वह जानती है उसे किसी के पैसों की कोई जरूरत नहीं - उसके हिस्से की पिता जी की संपत्ति और उसके गहने -जेवर पर्याप्त हैं उसे किसी मुसीबत से उबारने के लिए लेकिन कोई है जो उसके लिए ऐसा सोचता है, इस सोच भर ने उसे भीतर तक भर दिया था... नरेन की आमदनी कितनी है उसे आज तक नहीं मालूम, न कभी उसने बताया और न ही कभी उसने अपनी तरफ से जानने की कोशिश ही कि - उसकी आँखों ने जैसे उसकी आवाज पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली थी और भरी हुई सी आवाज में उसने बस इतना ही कहा था... 'तुम मेरी खातिर इतना सोचते हो मेरे लिए यही बहुत है...'

चाँद का रथ तेज गति से दौड़ रहा था - सितारे अपनी पूरी ताकत से चमक रहे थे और रातरानी अपनी खुशबू से उसे लगतार मदहोश किए जा रही थी - उसके भीतर संगीत की लय और एक चिरपरिचित दर्द की लहरें एक ही साथ उठ-गिर रही थीं - नरेन ने जो उसे बीस सालों में नहीं दिया, अभिनव चंद दिनों में ही जैसे वह सब अपनी हथेलियों में लिए उसके आगे खड़ा था - अब तक तो वह मानो हर पल, हर क्षण अपनी आसन्न

मृत्यु के इंतजार में थी - लेकिन एक मात्र उसके होने के अहसास भर ने जैसे सबकुछ बदल सा दिया था - जिंदगी नए सिरे से उसके भीतर दस्तक देने लगी थी - अब वह जीवन की प्रतीक्षा में खुशियों के सिंगारदान के आगे सजती-सँवरती... उसे तो पता भी नहीं था कि उसकी माँस-मज्जा में एक सितार सोया पड़ा है और जिसे जीवन से भरी किन्हीं उँगलियों का इंतजार है - अभिनव ने जैसे उसके मन की गहराइयों को थाह लिया था - उसके संस्पर्श भर से वर्षों से सोया पड़ा वह प्रतीक्षातुर सितार पूरे आवेग के साथ एक झंकार से भर उठा था - उसके भीतर एक मीठी सा कंपन हुआ था, एक पुलक भरी सिहरन सी और उसका रोम-रोम जैसे एक आदिम नशे से थिरक उठा था... अपने तन-मन पर पड़े नख-दंतों के अनगिनत खरोंचों पर वह अभिनव की मुलायम, उष्ण और अपनी सी आवाज को रूई के नर्म फाहों की तरह रख लेना चाहती थी... उसकी आवाज में एक अद्भुत सी लय है - वह महज आधे-एक घंटे की बातचीत में जैसे बीते चौबीस घंटों का एक-एक पल उसके साथ फिर से जी लेना चाहता है... शुरू-शुरू में उसे अजीब सा लगा था यह सब - लेकिन अब तो जैसे सारा दिन उसे उसी एकाध घंटे का इंतजार रहता है - जीवन में कोई ऐसा हो जिसके साथ अपना हर पल साझा किया जा सके, यह उसका बहुत ही पुराना सपना था - लेकिन पिछले बीस वर्षों में जिंदगी की जो हकीकतें उसने देखी हैं उसके बाद तो ऐसे ख्वाब उसे किसी प्रवासी पंछी की तरह ही लगते हैं... खूबसूरत, मनमोहक लेकिन बहारों के बाद चले जानेवाले... लेकिन नहीं, अभिनव ने धीरे-धीरे उसकी शिराओं में भरसे की मजबूत लकीरें खींच दी हैं... भरसा इस बात का कि न तो वह प्रवासी पंछी की तरह है और न ही किन्हीं बहारों के मौसम का मेहमान... उसकी बातें उसकी नसों में जैसे आश्वस्ति बन कर उतरती हैं -

उस दिन अभिनव को उसने अपनी कुछ पुरानी पेंटिंग्स मेल की थी जिनमें से कुछ की तस्वीरें उसने उसके कॉलेज के संग्रहालय में देखी थी और वहीं से खोजता -खोजता उस तक आ पहुँचा था - नेहा को पता है कि वह ठीक-ठाक सी पेंटिंग्स कर लेती है लेकिन अभिनव ने जिस आत्मीय तन्मयता के साथ उन पेंटिंग्स के रंग-संयोजन, दृश्य -विधान आदि पर उससे बातें की थी, उसे अपनी पेंटिंग्स के नए अर्थों का पता-सा लग गया था - नेहा अभिनव की आवाज के जादू से तो उसी दिन परिचित हो गई थी जिस दिन उसका पहली बार फोन आया था लेकिन आज वह उसकी दृष्टि पर भी मुग्ध थी - वह अचानक पुलक से भर गई...' अभिनव, मैं फिर से पेंटिंग करूँगी -'

अभिनव को उसकी आवाज में जैसे खुद की सफलता मचलती सी लगी थी... 'नेहा मैं भी यही चाहता हूँ - और हाँ, मैं तुम्हारी हर पेंटिंग का पहला दर्शक और क्लिक होना चाहता हूँ - तुम अपनी हर पेंटिंग पूरी कर के सबसे पहले मुझे मेल करोगी न?'

अभिनव की बातें नेहा के रोम-रोम में नमक की तरह घुल रही थीं, उसे कतरा-कतरा अपनी आँच से पिघलाती हुई... धीमी से आवाज में उसने कहा था - 'हाँ...' अचानक से जैसे उसकी आँखों में कुछ शीशे की किर्चों सा चुभा था... अभी उसने अपनी शादी की पहली सालगिरह भी नहीं मनाई थी - उस दिन अपनी एक पेंटिंग पूरी होने के बाद वह नरेन के घर लौटने का इंतजार कर रही थी - और उसके आते ही बहुत उत्साह से उसे उस कमरे तक ले गई थी जिसे वह मन ही मन अपना स्टूडियो कहती थी... नरेन ने अनमने ढंग से उसकी पेंटिंग पर नजर दौड़ाते हुए कहा था - 'तो फिर आज एक ही सब्जी बनी होगी... मैडम, आपकी इस पेंटिंग से मेरा पेट नहीं भरनेवाला... और पेट किसी तरह भर भी जाय तो मन तो तब तक नहीं भरता जब तक कि खाने की थाली में चार-पाँच कटोरियाँ न शामिल हों...' नेहा के भीतर मिट्टी का जो घड़ा न जाने कब से आकार ले रहा था... जिसके पकने की सोंधी सी महक न जाने कब से बाहर आने को मचल रही थी, जैसे पलक झपकते ही टूट कर बिखर गया - उसे आश्चर्य हुआ था कोई कलाकार किसी दूसरे की कला वह भी अपनी पत्नी की कला के प्रति इतनी निर्मम उदासीनता भी दिखा सकता है - उस दिन उसके भीतर जो दरका वह फिर कभी नहीं जुड़ पाया - वह आखिरी दिन था जब उसने नरेन से अपनी पेंटिंग के बारे में कोई बात की थी - उसके भीतर का कलाकार जैसे खाद-पानी के अभाव में अंदर ही अंदर मुरझाने लगा था - स्टूडियो में लगी इजेल और उसकी कई अधूरी पेंटिंग्स दिनों तक धूल खाने के बाद एक दिन कब-कैसे चुपचाप वहाँ से निकल कर स्टोर रूम के विस्थापित कैंप में चली गई उसे भी पता नहीं चला... क्षण भर पहले की पुलक पर जैसे बीस वर्ष पुरानी यादों ने एक कसैलापन फेर दिया था... वह जैसे चुप सी हो गई... अभिनव ने उसकी चुप्पी को धकलने की कोशिश की थी - 'क्या हुआ? कहाँ गुम हो गई? कुछ बोलो भी?'

'नहीं कुछ नहीं - मैंने बोला न, हाँ -'

'तुम्हारा फैन तो मैं तुम्हारे कॉलेज के संग्रहालय में ही हो गया था, मेल पर तुम्हारी पेंटिंग्स देख कर अब तुम्हारा कूलर हो गया हूँ -'

नेहा ने हँसने की कोशिश की थी... 'हूँ, लेकिन ए सी कब बनोगे?'

'मैं तो कब से तैयार बैठा हूँ - मौका तो दो... कहा न तुम्हारी हर पेंटिंग में सबसे पहले देखना चाहता हूँ... और हाँ, तुम्हारा यह कूलर तुमसे वादा करता है कि तुम्हारा ए सी तुम्हारी हर पेंटिंग पर एक कविता लिखेगा -' नेहा ने अपने पोर-पोर में एक अजीब सी थिरकन महसूस की - उसका रोम-रोम जैसे कूची में बदलने लगा था और न जाने

जीवन के कितने रंग उसकी आँखों से बह निकले थे जो न जाने कब से सूखे पड़े थे, पपड़ियाए...

बाहर मौसम बदल रहा था - आसमान में उड़ते बादल जैसे लंबे तने शीशम की झूमती फुनगियों से गले मिल रहे थे - कोई दूसरा दिन होता तो वह खिड़की दरवाजे बंद करती, छत पर फैले कपड़े समेट लाती... लेकिन आज उसका मन हुलस रहा था... वह छत तक निकल आई... देखते ही देखते मोटी-पतली बूँदें मूसलाधार बारिश में बदल गई थीं - अलगनी पर पड़े कपड़े भींगते रहे थे और वह देर तक बरसते बादलों से बतियाती रही थी - उसके भीतर वर्षों से फैले मरु का कोना-कोना जैसे इस धार से सजल हो आया था -

उस रात उसने खुशी की तस्वीर बनाई थी - काले सफेद बादलों से अटा पड़ा आसमान और उसकी आखिरी ऊँचाई को छू लेने को आतुर किसी परी की तरह उड़ती -लहराती उसकी बेटी, खुशी... श्वेत-श्याम रंगों के अद्भुत संयोजन से बनी उस तस्वीर में खुशी के दाहिने हाथ में उड़ते पतंग की डोर थी... अपनी खुशी को एकटक देखती नेहा ने कूची उठाई और वह सादा पतंग इंद्रधनुष के सात रंगों से सज गया... देर रात बल्कि भोर से कुछ ही देर पहले पेंटिंग पूरी करने के बाद उसने उसकी एक तस्वीर उतारी और उसे अभिनव को मेल करते हुए उसने सोचा... खुशी बिल्कुल मेरी ही तरह है... लंबे-घने केश, छरहरी काया और गहरे काजल के पीछे से झाँकती सपनीली आँखें - क्या उसकी आँखों में भी वही सपने पल रहे होंगे जो कभी उसकी आँखों में बलते थे... खुशी जब खुश हो कर उसके गले लगती है उसके मन का हर कूल-किनारा तरल हो आता है... वह उसे अभिनव के बारे में बताना चाहती है - उससे उसकी बातें करना चाहती है... लेकिन एक अनाम सा भय जैसे उसकी जुबान पर ताले सा लटका रहता है हरदम... अब वह बच्ची नहीं रही... कॉलेज जाने लगी है... सबकुछ समझती है... क्या सोचेगी वह... माँ और इस उम्र में... उसके किशोर मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा इसका... नहीं, वह कुछ नहीं बताएगी उसे अभिनव के बारे में... उसकी खुशियाँ छीनने का कोई हक नहीं है उसे... वह तो दुनिया में सबसे ज्यादा उसी पर भरोसा करती है, शायद भगवान से भी ज्यादा... -

नेहा चाहती है कि वह खुशी के आगे नरेन से कभी न झगड़े, लेकिन नरेन कई बार मजबूर कर देता है उसे... ऐसे क्षणों में खुशी अक्सर दूर कहीं देखती रहती है शून्य में और नरेन के जाने के बाद चुपचाप बिलाआवाज उसके पास आ उसकी हथेलियों को थाम लेती है जैसे खुद को उसके साथ होने का अहसास दिला रही हो... और उस दिन तो हद ही हो गई थी जब उसने उसके आँसू पोछते हुए कहा था - 'माँ, मैं नौकरी करने

के बाद तुम्हें अपने साथ रखूँगी... मैं शादी कर के तुम्हें दुहराना नहीं चाहती...' नेहा ने उसके होठों पर अपनी उँगली रख दी थी - 'नहीं, खुशी, ऐसा नहीं कहते -' खुशी की मासूम शकल और उसकी भोली बातें याद आते ही वह हर बार अपना इरादा बदल देती है या यूँ कहें कि अपने जुबान तक आ चुके अभिनव के नाम को कंठ के नीचे ही घुट जाने देती है... अभिनव का नाम अपनापे का गोला बन कर उसके भीतर चक्कर काटता है... वह चाह-सोच कर भी उसकी बातें किसी और से नहीं कर सकती, उससे भी नहीं जो उसकी सबसे ज्यादा अपनी है, जो उसे जीवन में सबसे ज्यादा प्यारी है - यदि खुदा न खास्ता अभिनव को कुछ हो गया तो वह सबके सामने दो बूँद आँसू भी न बहा पाएगी - ऐसा सोचकर उसके भीतर का अनुराग आग के गोले की तरह तेजी से उभरता और उसके मन-प्राण को बेरहमी से झुलसा जाता है... - उसके कण-कण से एक चीख-सी निकलती है और उसके भीतर ही घुट कर दम तोड़ देती है... बेचैनी का तेजाब उसके नसों में उबलने लगता है और वह एक बेनाम पीड़ा के खारे समंदर में डूब जाती है...

अभिनव को नेहा की नई पेंटिंग बहुत पसंद आई थी - सपनों का जो इंद्रधनुष वह उसकी आँखों में तैरते देखना चाहता था उसकी स्पष्ट छाप उसे खुशी की तस्वीर में दिख रही थी... खुशी के लहराते कदमों और बोलती-सी आँखों में जैसे नेहा ने खुद को ही निचोड़ दिया था - उसने मेल पर अपनी प्रतिक्रिया लिखी थी... 'नेहा, तुम्हारा यह कूलर अब सचमुच ए सी हो गया है - और फिर अपने वादे एक अनुसार उस पेंटिंग के मूड को दर्शाती एक खूबसूरत सी कविता...'

खुशी को उसकी तस्वीर दिखाने के बाद उस दिन नेहा ने उसे अभिनव की कविता भी सुनाई थी - अपनी तस्वीर को देख खुशी तो पहले से ही खुश थी, कविता सुनने के बाद तो जैसे वह किलक ही पड़ी...' माँ, इतनी सुंदर कविता किस ने लिखी?'

'मेरे एक दो...' नेहा ने बड़ी मेहनत से दोस्त शब्द को गटकते हुए कहा था... 'एक परिचित ने -'

'क्या नाम है उनका?'

'अभिनव -' नेहा की आवाज में एक अतिरिक्त सतर्कता थी और एक अनाम सा संकोच भी - उसने जबरन बातचीत की दिशा बदल दी थी... लेकिन, खुशी को अभिनव की कविता सुना के नेहा को जितना अच्छा लगा था उससे भी ज्यादा अच्छा अभिनव के प्रति उसके कौतूहल को देख कर लगा - उसके भीतर माटी के दीये में जगमगाती-सी एक निष्कंप दीपशिखा लहराई थी... उसके अणु-अणु को एक नई

रोशनी से भरती हुई... लेकिन अगले ही पल उसे एक अदृश्य आशंका ने घेर लिया था, बाहर से भीतर तक पता नहीं खुशी ने क्या सोचा हो... कहीं उसने इसका कोई और अर्थ न निकाल लिया हो...

खुशी को अभिनव की कविता याद हो गई थी - माँ की पेंटिंग और अभिनव की कविता उसकी मन में बारी-बारी से आ-जा रहे थे - अभिनव को परिचित कहते हुए माँ के चेहरे पर जो एक अकबकाहट सी उग आई थी उसकी आँखों में अब भी ताजा थी... उसे पापा की याद हो आई... वे दिन रात अपनी फोटोग्राफी में व्यस्त रहते हैं - घर और माँ तो बहुत दूर उन्हें उसके लिए भी समय नहीं रहता... टूर... प्रदर्शनी... वर्कशॉप और न जाने क्या-क्या - हाँ, वो इतना जरूर चाहते हैं कि उनकी हर प्रदर्शनी में माँ उनके साथ जरूर जाए, सज-सँवर कर - उसकी आँखों के आगे ऐसी कई तस्वीरें कौंध गई जिसमें पापा दीप जलाते हुए किसे प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं और सजी-सँवरी माँ अपना आँचल थामे उनके पीछे खड़ी है... उसकी जुबान पर जैसे एक तीतापन उग आया था... वह जानती है माँ को इस तरह शो पीस बन कर कहीं जाना पसंद नहीं - शुरू-शुरू में तो उसने मना करने की भी कोशिश की थी - लेकिन पापा को उसका मन पढ़ने की फुर्सत कहाँ थी - वे तो उसे ऐसे ही समझते थे जैसे किसी मैच में जीत कर लाइ गई ट्राफी - और ट्राफी का मन कहाँ - उसे तो अपने विजेता के साथ हर जगह जाने को तैयार रहना चाहिए... उसकी जुबान पर तैरता तीतापन अब और कसैला हो कर उसके भीतर तक फैलने लगा था कि इसी बीच अभिनव की पंक्तियाँ अँधेरे में जगमगाते जुगनु की तरह उसके भीतर जलने-बुझने लगीं... 'उड़ो, कि आकाश तुम्हारे ही इंतजार में है...' उन पंक्तियों की रोशनी में उसे माँ की बुझी-बुझी आँखें दिखी थी... उसे याद आया इधर कई दिनों से घर का माहौल ठीक नहीं दिखता - माँ की आँखों में एक अजीब सी उदासी टँगी रहती है... खामोश-सी लेकिन बिना कुछ कहे ही सबकुछ कह जानेवाली... वह उसे देख मुस्कराने की कोशिश करती है लेकिन इस कोशिश में जैसे उसकी उदासी और उघड़ जाती है... नेहा को हर बार लगता है कि उसने खुद को उघड़ने से बचा लिया और खुशी की आँखें जैसे हर बार उसे देख लेती हैं... उस दिन वह सोने की तैयारी में थी... पापा अस्फुट सी आवाज में माँ को कुछ कह रहे थे... वह उन्हें मेरे जगो होने का वास्ता दे चुप रहने का इशारा कर रही थी लेकिन उनका गुस्सा जैसे सातवें आसमान पर था... उनकी अस्फुट सी बुदबुदाहट अचानक से तेज हो गई थी... सोने के नाटक में उसने खुद को एक जीवित लाश की तरह बिस्तर से चिपका लिया था... पापा की आवाज जैसे उसके कानों में किसी गर्म सलाखों की तरह उतर रही थी... 'कौन है वह...? बता किसे फोन करती है, तुम इन दिनों...?' खुशी की पीठ में जड़ी उसकी आँखें देखती हैं... माँ की जुबान बंद है, लेकिन उसकी आँखें अब भी बोल रही हैं... 'मेरा न सही, बेटी

का तो ख्याल करो...' लेकिन पापा को कुछ नहीं सुनाई पड़ रहा... वे गुस्से में हैं... कुछ देर यूँ ही बोलते रहने के बाद उन्होंने तकिया-चादर उठाया और नीचे के कमरे की तरफ चल पड़े हैं...

धीरे से दरवाजे की सिटकनी लगाने के बाद नेहा खुशी की बगल में लेट गई थी... उसे मालूम था खुशी सो नहीं रही... उसका मन उस से लिपट कर रोने को हो रहा था लेकिन हिम्मत नहीं हुई... वह दूसरी तरफ मुँह किए लेटी रही... दोनों के बीच झिझक की एक महीन सी दीवर खड़ी थी जैसे बारी-बारी से उन दोनों का चेहरा देख रही हों इस उम्मीद में कि कोई तो उसे तोड़ने की पहल करेगा... तभी खुशी के भीतर एक हलचल सी हुई और उसने नेहा की हथेलियाँ अपनी हथेलियों में ले ली... हमेशा की तरह - अभी उन दोनों के बीच उनकी साँसों के अलावा और कुछ नहीं था... समय भी जैसे चुपचाप उनके बीच से सरक कर हाशिये की तरफ चला गया था... कि तभी खुशी के सधे हुए शब्द नेहा के कानों से टकराए थे... 'तुम्हारी पेंटिंग और अभिनव अंकल की कविताओं की प्रदर्शनी साथ-साथ लगे तो -?' खुशी की आवाज में एक अजीब तरह की तटस्थता थी जैसे अनगिनत रिहर्सल के बाद कोई मँजा हुआ अभिनेता रंगमंच पर संवाद बोल रहा हो... बाहर की दुनिया से जितना निर्लिप्त अपने किरदार के भीतर उतना ही डूबा हुआ... नेहा सकते में आ गई थी, जैसे किसी ने अचानक से उसकी चोरी पकड़ ली हो... उसने खुद को संभालने की एक नाकाम सी कोशिश की... 'कैसी बेतुकी बातें कर रही हो... प्रदर्शनी और मेरी पेंटिंग्स की...'

खुशी ने वह भी सुना जो नेहा की जुबान पर आते-आते रह गया था... '...और वह भी अभिनव की कविताओं के साथ...?'

नेहा की आवाज अब भी लड़खड़ा रही थी... 'तुम्हें जरूर कुछ गलतफहमी हुई है...'

'नहीं, मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई - मैं वही कह रही हूँ जो समझ रही हूँ और मुझे पता है मैं कुछ भी गलत नहीं समझ रही... तुम देखना अब यह प्रदर्शनी जरूर लगेगी... और हाँ, तुम कहती हो न कि मेरी राइटिंग बहुत अच्छी है, तुम्हारी पेंटिंग के नीचे अंकल की कविताएँ मैं अपने हाथों से लिखूँगी...' नेहा की हथेलियों पर खुशी की हथेलियों की पकड़ मजबूत हो रही थी... 'और हाँ, ऐसा करने से हमें कोई नहीं रोक सकता, पापा भी नहीं -' नेहा ने खुशी को जोर से भींच लिया था... उसे लगा खुशी सचमुच बड़ी हो गई है...

सुनहरे पंखोंवाला चाँद और तेजी से फड़फड़ा रहा था... सुबह की प्रतीक्षा में टिमटिमाते तारों की रोशनी जैसे अचानक से बढ़ गई थी... ढलती रात के साथ रातरानी की महक

सबकुछ अपने आगोश में भर लेना चाहती थी... नेहा ने डायरी के हल्के बादामी सफे पर एक जोड़ी आँखें खींची... गहरी, नीली और सपनों से भरी हुई... उसने गौर किया ये आँखें बिल्कुल खुशी की आँखों जैसी थी...

